

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE FOR RAJASTHAN
AT JAIPUR BENCH, JAIPUR.

J U D G M E N T

S.B. Civil Misc. Appeal No.4396/2007
S.B. Civil Misc. Stay Application No.
1161/2007
(The New India Assurance Co. Ltd. Versus
Nirmala Devi & Ors.)

DATE OF JUDGMENT : 8.04.2015

HON'BLE MR. JUSTICE MAHESH CHANDRA SHARMA

Mr. Ram Singh Rathore, counsel for the
appellant

Mr. RP Vijay, for the respondent no. 5

This appeal has been filed against the
judgment and award passed by the Tribunal.

Brief facts of the case are that the claimants filed the claim petition before the Tribunal with regard to death of Chawandraj in a road accident, which is said to have taken place on 2.6.2004. Thereafter notices were issued; reply was filed; certain issues were framed and after hearing all the parties, the learned Tribunal passed the aforesaid impugned judgment and award dated 2.11.2007, decreeing an amount of Rs. 3,76,000/- as compensation in favour of claimants and fastened the entire liability upon the appellant – The New India Assurance Co. Ltd.

Being aggrieved by the aforesaid judgment and award passed by the Tribunal, this appeal has been filed by the New India Assurance Co. Ltd..

Learned counsel for the Insurance Co.

has contended that the Tribunal has committed error while passing the award not taking into consideration the oral as well as documentary evidence available on record. He has further contended that the Tribunal ought to have decided the petition on the basis of law of Workmen Compensation Act, 1923, but the learned Tribunal did not consider the pleadings of the appellant and awarded compensation contrary to Workmen Compensation Act. He has further contended that the Tribunal ought to have framed the issues and thereafter decided the claim petition, but the learned Tribunal has not followed the provisions of the Act. Hence, the impugned judgment and award passed by the Tribunal should be quashed and set-aside.

On the other hand, learned counsel for the Oriental Insurance Co. has opposed the arguments of learned counsel for the appellant and contended that the Tribunal on the basis of material adduced before it, rightly passed the impugned judgment and award. Hence, no interference is required by this Court.

I have heard learned counsel for the parties and carefully perused the relevant material on record.

Looking to the facts and circumstances of the case, the Tribunal is found to have dealt with each and every aspect of the matter ad-longum and rightly decided the matter. I am in agreement with the findings arrived at by the learned Tribunal while passing the impugned judgment and award, the relevant whereof is reproduced as under:

"इस मामले के घटनाक्रम के अनुसार एक ट्रक सं० आ.जे.14 जी.6994 मसका के बेसिंग भस्कर तेंक से दिली ज रह थ, जिसका पिछा तय पट गय, ट्रक के खूब कके जल खसी व चलत तय बल्ले के कार्यवाही कर रहे तब, अर्थात दिनांक 2-6-04 के रात्रि करीब 2:30 ए.एम. पर, तेंक के तरफ से मसका चवथाज ट्रक संख्या : आ.जे.01 जी.3121 के चलत हुआ अग, ट्रक में पथर के चैक भर हुए थे, और यह ट्रक संख्या : आ.जे.01 जी.3121 ट्रक संख्या : आ.जे.14 जी.6994 से टकरा गय, जिसे ट्रक चलत चवथाज के मृत्यु हो गई, जिसके पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट मर्क-11 है। इस प्रकरण में केवल यह विनिश्चय करत है क्या दुर्घटना में मेडयन संलिप्त थ, क्या दुर्घटना मेडयन के संलिप्त में हुई। इसमें जो गतिमान मेडयन थ, उसे खे मेडयन के टक्कर मरी है। अतः क्षतिपूर्ति में संलिप्त गतिमान मेडयन के मनी जती है, खे मेडयन के नहीं। इस मामले में गतिमान दुर्घटना में संलिप्त मेडयन ट्रक संख्या : आ.जे.01 जी.3121 है, अतः प्रार्थना के क्षतिपूर्ति अदायी के लिए उक्त वहन क स्वामी व बीम कंपनी क्रमशः अप्रार्थना सं०-4 व 5 उत्तरये हैं। यहां यह लिखन अधिपूर्ण है कि उक्त ट्रक दुर्घटना के समय अप्रार्थ सं०-5 के यहां बीमसि थ, अतः क्षतिपूर्ति अदायी के लिए बीम कंपनी पूर्णरूपेण उत्तरये है।

प्रथमपत्र में वर्णित अभिधान एवं पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट प्रश्ना-11 के अनुसार मसका चवथाज के दुर्घटना के समय अगु करीब 40 वर्ष थ, अतः धरा 163-ए एम.वी.एच के दूसरी अनुसूची के अनुसार में इस मामले में 15 क गुणक क्रिय जल उचित पते हैं।

वेतन प्रमाण पत्र प्रश्ना-1 के अनुसार मसका 3,000/- रुपये मसकि प्राप्त करत थ, अतः इसमें से 1/3 अर्थात 1000/- रुपये मसका के स्वयं के खर्च

के रशि कम करने के बाद प्रथमगण के 2000/- रुपये प्रतिह अग के क्षति हेन निर्दिष्ट किय जत है। इस प्रकार प्रथमगण के $2000 \times 12 \times 15 = 3,60,000/-$ रुपये अग के क्षति हेन निर्दिष्ट किय जत है।

इसके अलावा प्रथमगण के धरा 163-ए.एम.वी.ए.ए. के द्वितीय सशि के क्रमंक 3 के ममें में वह-संस्कार व्यय के म्द में 2,000/- रुपये, सम्पति क्षति के म्द में 2,500/- रुपये, मन्सिक वेदन, स्नेह-मर्गदर्शन से वंन के म्द में प्रत्येक प्रथ के पंच हजार रुपये अर्थात् देन प्रथमगण के लिए 10,000/- रुपये भी दिय जत उचित पते हैं। दुर्घटनास्थल से मृतक के लश अस्पताल, फिर अगने गंव तक ले जाने के परिवहन व्यय के म्द में 1,500/- रुपये भी प्रथमगण के बौर क्षति क्षति रशि निर्दिष्ट के जत है, जो वे अर्थगण सं 0 : 4 व 5 से संयुक्तः व पृथक् पृथक् रूप से प्राप्त करने के अधिकारी हैं। इस क्षति क्षति रशि पर, वर्तमान प्रवृत्ति बैंक बज दों एवं नवीन न्ययिक द्धतों में प्रतिदिन विनियों के रेशमी में, यह ओझा देन भी उचित हेग कि प्रथमगण/उक्त अर्थगण से प्रथमपत्र पेश करने के तिथि से वस्तुकि अग्रणी के तिथि तक छः प्रतिशत वषिक दर से बज भी प्राप्त करेंगे।"

In this view of the matter, I do not find any ground to take a different view, than that of the view taken by the learned Tribunal. Hence, the appeal filed by the Insurance Co. being without any substance, is hereby dismissed after confirming the judgment and award passed by the Tribunal.

Stay application(s) also stand dismissed accordingly.

(MAHESH CHANDRA SHARMA) J.

All corrections made in the judgment / order have been incorporated in the judgment / order being E-mailed.

Dilip Khandelwal
PA